❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर

MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध

रु. ~~2200~~ 1100/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
9650183336, 9540040339

वर्ष 47, अंक 19 — एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 मार्च, 2024 से रविवार 31 मार्च, 2024
विक्रमी सम्वत् 2080 — सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 201 — पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये — दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

चलो अमेरिका! चलो अमेरिका!! ।।ओ३म्।। अमेरिका चलो! अमेरिका चलो!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्य समाज स्थापना वर्ष के देश-विदेश में दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अमेरिका

18-19-20-21 जुलाई, 2024 : न्यूयार्क (अमेरिका)

सम्माननीय भाईयो-बहिनो!

जैसा कि आप जानते ही हैं कि सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए वर्तमान समय अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से भरा हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रंखला में देश विदेश में भव्य और विराट आयोजन सफलतापूर्वक निरन्तर हो रहे हैं। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन न्यूयॉर्क में किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त आर्यजनों से हमारा अनुरोध है कि -

विदेशों में रहने वाले महानुभाव
भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में रहने वाले समस्त आर्य महानुभाव अमेरिका सम्मेलन में भाग लेने हेतु सपरिवार पधारें।

अमेरिका में रहने वालों को दें निमन्त्रण
आर्यजन स्वयं सपरिवार पहुँचे तथा अमेरिका में रहने वाले पारिवारिक जनों और मित्रों को निमंत्रण देकर आने का अनुरोध अवश्य करें

सभा की ओर से आमन्त्रण भेजें
सभा की ओर से आमन्त्रण भिजवाने के लिए विदेश प्रवासी आर्यजनों के नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र 9650183339 पर व्हाट्सएप करें

आर्य महासम्मेलन के ऐतिहासिक कार्यक्रमों के बनें साक्षी

न्यूयार्क में आर्यों का मेला लगेगा, महर्षि दयानन्द का गुणगान किया जाएगा, यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरक और ऐतिहासिक होगा, जिसके हम सब साक्षी बनेंगे। आओ, मिलकर अमेरिका की धरा पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती मनाएं, उनकी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करें और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष सार्थक करें। भारत से महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले समस्त महानुभावों के लिए पंजीकरण कराना अनिवार्य है। आप भी अपना पंजीकरण शीघ्र कराएं।

अमेरिका महासम्मेलन, पंजीकरण, टूर पैकेजे/कार्यक्रम और वीजा आदि की जानकारी/सहयोग प्राप्त करने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी 91-9650183339 को व्हाट्सएप्प करें। विदेश में रहने वाले अपने परिजनों का नाम, पता और सम्पर्क सूत्र भी इसी मोबाईल नं. पर नोट कराएं/व्हाट्एप्प करें।

अमेरिका यात्रा एवं टूर पैकेज की जानकारी दिया गया कोड स्कैन करके प्राप्त कर सकते हैं तथा पृष्ठ 8 पर प्रकाशित की गई है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 21 अप्रैल, 2024 सायं : 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 21 अप्रैल, 2024** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 3:00 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय सम्मानित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्य महानुभावों से अनुरोध है कि बैठक की तिथि एवं समय नोट कर लें और बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

अन्तरंग सभा बैठक का ऐजेण्डा पत्रक शीघ्र ही व्हाट्सएप्प, टेलीग्राम एवं साधारण डाक से आपकी सेवा में विधिवत् प्रेषित किया जाएगा।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य (प्रधान) — विनय आर्य (महामन्त्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
19वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती वर्ष पर आर्यपरिवारों ने लिया 200 नए लोगों तक महर्षि दयानन्द के मन्तव्य एवं विचार पहुंचाने का संकल्प

स्वामी सच्चिदानन्द जी को दिया गया वर्ष 2024 का ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान

सबसे नवीनतम विवाहित जोड़े एवं सबसे छोटे बच्चे का समारोह में पधारने पर हुआ सम्मान

आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर जी को एक पुन: दिया गया समारोह में पधारे सबसे बुजुर्ग आर्य पुरुष का सम्मान

समारोह में उपलब्ध सेवाओं, अविस्मर्णीय पलों की चित्रमय झांकी एवं सम्पूर्ण रिपोर्ट आगामी अंकों में प्रकाशित की जाएगी

- शेष पृष्ठ 4 पर

देववाणी-संस्कृत

पूर्ण आयु प्राप्त करें

वेद-स्वाध्याय

तस्मा अग्निर्भारतः शर्म यंसज्ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम्।
यो इन्द्राय सुनुवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम्।। - ऋक्. 4/25/4
ऋषिः वामदेवः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः - भुरिक्पङ्क्तिः।।

शब्दार्थ - **नरे** = असली नर **नर्याय** = नरों के हितकारी और **नृणां नृतमाय** = नरों में नरोत्तम **इन्द्राय** = इन्द्र के लिए **यः** = जो पुरुष सुनुवाम **इति** = 'आओ, हम उसका यजन करें' ऐसा **आह** = कहता है **तस्मै** = उसके लिए भारतः **अग्निः** = भरण करनेवाला प्राणाग्नि **शर्म** = अपनी शरणों, सुख को **यंसत** = देता है, वह **ज्योक्** = चिरकाल तक **उच्चरन्तम्** = उदय होते हुए **सूर्यम्** = सूर्य को **पश्यात्** = देखता है।

विनय - "आओ हम इन्द्र का यजन करेंगे" - इस प्रकार जो मनुष्य कहता है, जो स्वयं इन्द्र का यजन करता है और दूसरों को यज्ञ करने की प्रेरणा करता है, जो यह यज्ञ करता और करवाता है, वह मनुष्य निःसन्देह महापुरुष होता है। वह सच्चा ब्राह्मण, मनुष्य-समाज का सच्चा नेता और आदर्श पुरुष बनता है। ओह! वह इन्द्र जो असली नर है, असली पुरुष है, जो हम नरों का एकमात्र हितकारी है और जो हम नरों में 'नृतम' है, हम पुरुषों में पुरुषोत्तम है, उस इन्द्र का यदि हम नर लोग यजन नहीं करेंगे तो और किसका यजन करेंगे? उस नेता 'नर' इन्द्र का, जिसके हाथ में इस विशाल ब्रह्माण्ड की बागडोर है, जो इस चराचर सृष्टि का संचालक है, उस 'नर' का यजन करना मनुष्य-'नर' की उन्नति के लिए आवश्यक है। इस इन्द्र-'नर' का यजन किये बिना मनुष्य अपने मनुष्यत्व की पूर्णता को कभी नहीं प्राप्त कर सकता, पूर्ण नर नहीं हो सकता। इसलिए वे ही महिमाशाली पुरुष अपने पुरुषार्थ को प्राप्त कर रहे हैं जो इन्द्र का यज्ञ कर रहे हैं और करवा रहे हैं।

ऐसे ही इन्द्रयाजी पुरुषों को 'भारत अग्नि' अपने शरण में लेता है, अपना आश्रय, अपना सुख प्रदान करता है। 'भारत अग्नि' वह अग्नि है जो हमारा-हमारे शरीर और इस संसार-शरीर का भरण (धारण, पोषण) करता है। यह प्राणाग्नि है, इसी अग्नि में इन्द्र के लिए यज्ञ किया जाता है। इसमें जब हम इन्द्र के लिए अपने सब भोग्यजगद्रूपी सोम का और भोगेच्छा-रूपी सोमरस का हवन करते हैं तो हममें यह प्राणाग्नि खूब प्रदीप्त होता है और प्राणरूप सूर्य 'इन्द्र' के द्वारा हमारी सोमाहुति को इन्द्र परमेश्वर तक पहुँचाता है। एवं, प्रदीप्त हुआ यह 'भारत अग्नि' हमारा भरण करता है, हमारा पूरा धारण-पोषण करता है। हमें अपना महान् आश्रय, रक्षण, आनन्द प्रदान करता हुआ हमारा धारण और पोषण करता है। हममें 'भारत' प्राण भरपूर होता है और इस प्राण के साथ हमारा सम्पूर्ण मनुष्यत्व विकसित होता है। तब सूर्य देव हमारे लिए चिरकाल तक प्राण, प्रकाश, जागृति और जीवन देता हुआ उदित होता है। हम पूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं। प्राणरूप आदित्य से नित्य नया प्राण-प्रकाश पाते हुए पूर्ण आयु तक उसके दर्शन करते हुए पूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं। इस प्रकार हम महान् शक्ति, महान् जीवनवाले महापुरुष बन जाते हैं। यह सब इन्द्र-यजन की महिमा है। इन्द्रयाजी बनकर भारत अग्नि की शरण पाने की महिमा है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

हिन्दू समाज पर नवाब हैदराबाद अत्याचारों और हैदराबाद सत्याग्रह का स्मरण कराती फिल्म

रजाकार और आर्यसमाज

15 अगस्त, 1947 को हिन्दुस्तान को अंग्रेजों से स्वतंत्रता तो मिली, लेकिन हैदराबाद आजाद नहीं हो पाया था। वहां निजाम का शासन था, एक इस्लामी शासन जिसने बर्बरता की हद पार कर दी। इतिहास के पन्नों में दबी हैदराबाद नरसंहार की कहानी कहती इस फिल्म को लेकर सिनेमा की दुनिया से राजनतिक घरानों तक में भी गहमागहमी बढ़ गई है। क्योंकि इस मूवी में हैदराबाद में रजाकारों का आतंक दिखाया गया है। लेकिन इस आतंक से लड़ने वाले आर्य समाज के लोग भी थे। शायद फिल्म निर्माता उतना नहीं दिखा पाया जितना दिखाना चाहिए था। कारण हैदराबाद, देश भी उस दौरान कुछ बड़ी रियासतों में से एक था। इस रियासत की कुल आबादी में 84 प्रतिशत हिस्सा हिन्दुओं का था। जबकि 11 प्रतिशत मुसलमान और बाक़ी के जैन धर्म के अनुयायी थे। लेकिन 84 फीसदी हिन्दुओं के ऊपर एक मुस्लिम शासक था। यहां क़रीब दो सदियों से आसफ़ जाही वंश का राज था।

हैदराबाद में उस समय हिन्दू थे 84 फीसदी लेकिन उनकी कोई सुनने वाला नहीं था। वे बहुसंख्यक होकर भी प्रताड़ना और गर्दन नीची करके जीने के आदी हो चुके थे। उन्हें सिर्फ इतना पता था कि वह हिन्दू हैं लेकिन क्यों हैं, कैसे हैं? उनके अन्दर का गर्व मर चुका था। क्योंकि वहां की निजाम सरकार एक मजहबी महकमा यानि मंत्रालय था। वहां से आज्ञा लिए बिना न तो कोई नया मंदिर बना सकते थे और न ही पुराने की मरमम्त करा सकते थे। अनुमति वहां से मिलती नहीं थी तो वर्षा-तूफान आदि में अधिकांश मंदिर खंडहर हो गये थे। हिन्दू अपने त्यौहार गाजे बाजे के साथ नहीं मना सकते थे। अगर मुहर्रम या दशहरा एक साथ पड़ जाता था तो हिन्दुओं को शोक मनाना पड़ता था। इसके अलावा हिन्दुओं को धार्मिक अनुष्ठान के लिए स्वीकृति लेनी पड़ती थी। किन्तु इसके विपरीत देखिये कि मुसलमान जब चाहें अपने त्यौहार मना सकते थे।

या कह लीजिये कि हैदराबाद राज्य के हिन्दू समाज का कोई रखवाला नहीं था। उलटे हिन्दुओं को समाप्त करने के लिए खाकसार पार्टी, निज़ाम की सेना, इत्तेहादुल संगठन, दीनदार सिद्दीक के मजहबी प्रचारक अनुयायी, सबने कोहराम मचा रखा था। खाकसार पार्टी, दीनदार सिद्दीक़ पार्टी, इत्तेहादुल संगठन और रज़ाकार के पीछे निजाम सरकार थी। इसलिए वे सभी हिन्दुओं के खिलाफ बेरोकटोक हिंसा कर रहे थे। हिन्दुओं की महिलाओं को उठा लिया जाता था। हिन्दू अपने ही देश में नरक का जीवन जी रहे थे।

आर्य समाज के लोगों से यह बर्दास्त नहीं हुआ। उस दौरान उन्होंने हैदराबाद के उदगीर में अपना मुख्य कार्यालय खोला और वैदिक संदेश नाम का वृत्तपत्र सोलापुर से प्रकाशित करना शुरू किया। अब वैदिक संदेश को निज़ाम के स्टेट में सभी जगह पहुँचाने की व्यवस्था की जाने लगी। मातृभूमि के प्रति निश्चल प्रेम और अपने धर्म पर प्रगाढ़ निष्ठा, इन दो मान बिन्दुओं के लिए हर आर्य समाजी अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार होने लगा। लोगों पर प्रभाव पड़ा और अगले दो-तीन सालों में ही व्यवस्थित ढंग से काम करने वाली लगभग दो सौ शाखाएँ खुल गईं। उस दौरान भाई बंसीलाल जी, श्यामलाल जी ने आर्य समाज से जुड़कर काम करना आरम्भ किया। परिणाम 1930 तक एक साल के अन्दर हैदराबाद राज्य के प्रत्येक जिले में आर्य समाज का संगठन खड़ा होने लगा। या ये कहिये कि निजाम के साथ आर्य समाज का एक वैध युद्ध आरम्भ हो गया था। इस युद्ध में आर्य समाज के लोग शंतिपूर्वक हिन्दुओं की मांग लेकर पत्र लिखने लगे। जब यह बात मुस्लिम संगठनों और मजहबी निजाम तक पहुंची तो उन्हें नागवार गुजरी। आखिर ये कौन लोग हैं, जो हिन्दुओं का पक्ष रख रहे हैं उनके अन्दर स्वाभिमान और गर्व पैदा कर रहे हैं। अब निजाम की नजर आर्य समाज पर पड़ी।

आर्य समाज के लोग शांति से विवाद का हल चाहते थे निजाम उतना ही कठोरता अपनाता जा रहा था। अचानक बीदर जिले में हवन कुंड तोड़े जाने लगे, आर्य समाज मंदिरों की जमीन पर कब्ज़ा शुरू कर दिया। बात यहाँ तक आ पहुंची की हवन कुंड को ही सम्पूर्ण मंदिर समझकर उन पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके अतिरिक्त भी देखें तो खटगाँव में कई मुसलमानों ने जनेऊ पहने लोगों के जनेऊ तोड़ डाले। मंदिरों के उत्सव में भाग लेने वाले लोगों पर हमले होने लगे। आर्य समाज के लोगों पर झूठे मुकदमे लगाये जाने लगे। यहाँ तक कि किसी के हिन्दू के हाथ में सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक देखते ही निजामी पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती। यानि शांतिपूर्वक काम कर रहे तत्कालीन आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के लिए यह नई परेशानी थी। .... आर्य समाज के नेता भाई बंसीलाल जी, श्याम लाल जी, शेषराव जी, दत्तात्रेय प्रसाद, गोपाल देव शास्त्री आदि कई आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव घूम कर हिन्दुओं को वैदिक धर्म के ध्वज तले हथियार जमा करने लगे। अनगिनत गांवों में आर्य समाज मंदिर स्थापित हुए, इत्तेहादुल पार्टी या रजाकार की ओर से आक्रमण होने का कोई भी अंदेशा होता, तो आर्य समाज मंदिर में लोग जुटने लगते घर-घर से पुरुष और 18-20 साल के लड़के लाठियां, कुल्हाड़ी, भाले, बरछियाँ, तलवारें, बंदूके आदि लेकर आर्य समाज मंदिर की ओर दौड़ पड़ते। 5-10 मिनट में ही सभी, पूरे अनुशासित तरीके से हिन्दू सेना मुकाबले के लिए तैयार हो जाती।

21 मई 1933 निजाम सरकार द्वारा अचानक आर्य समाज हल्लीखेड का उत्सव रोक दिया गया और हवाला दिया कि यह उत्सव धार्मिक नहीं है। स्थानीय पुलिस और मुस्लिम गुंडों ने खुला अत्याचार किया। आर्य समाज ने निजाम के प्रधानमंत्री को पत्र लिखा तथा उत्सव की अनुमति मांगी लेकिन इसका उत्तर नहीं आया।

- शेष पृष्ठ 7 पर

विद्यार्थी प्रतिभा विकास के सूत्र

....अक्सर अभिभावकों द्वारा सुनने में आता है कि हमारे बच्चे का दिमाग थोड़ा मोटा है, उसमें थोड़ी बुद्धि कम है आदि, किसी भी विद्यार्थी का दिमाग मोटा-पतला नहीं होता, पर कुछ बनने की और आगे बढ़ने की लगन मन में ही होनी चाहिए। लगन से व्यक्ति गगन तक पहुंच जाता है। अगर विद्यार्थी परिश्रमी है और पुरुषार्थी है तो उसकी बुद्धि सदैव प्रखर रहती है। जो भावनात्मक प्रतिभा अन्दर है, उसे विकसित कैसे करें? पहली बात यह है कि सामने चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो, जल्दी घबराएं नहीं, बल्कि हिम्मत रखकर चलें। ऐसे विचारों को मन में भी न आने दें कि अब हम कुछ नहीं कर सकते हैं, हमारे पास तो कुछ भी नहीं है और हम तो बहुत गरीब हैं। हमारा तो कोई साथ देने वाला भी नहीं है। हमारे मां-बाप तो किसी मिनिस्टर के रिश्तेदार नहीं हैं। हम लोग तो वैसे भी पीछे हैं। पैसे की बहुत कमी है। हमारे पिता का कोई भी पद नहीं है। अगर आप में कुछ बनने की हिम्मत है तो आप अपनी लगन के माध्यम से लगातार आगे बढ़ते जाएंगे, केवल अपना धैर्य, हिम्मत, साहस बनाए रखें, यहां पर प्रस्तुत हैं विद्यार्थी प्रतिभा विकास के कुछ सूत्र.....

कोई भी व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न नहीं होता। हर व्यक्ति के अन्दर कोई न कोई प्रतिभा अवश्य होती है। इंसान में प्रतिभा (टैलेन्ट) केवल 2 प्रतिशत होता है। 98 प्रतिशत तो उसका पुरुषार्थ होता है। ज्यादा से ज्यादा औसत 3 प्रतिशत हो सकता है, लेकिन 97 या 98 प्रतिशत पुरुषार्थ ही मनुष्य की प्रतिभा को विकसित करता है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि अपनी प्रतिभा को विकसित करने का तरीका क्या है? कई लोग सोचते हैं कि स्मृति बढ़ाने की चीजें खानी चाहिए। जिससे स्मरणशक्ति अच्छी हो जाए। लेकिन कभी भी अक्ल की दवाई बाजार में नहीं मिलती है। मेमोरी, याददाश्त बढ़ाने की दवाईयां शुरू हुई; लेकिन वे सब फेल हैं। बहुत सारे टैबलेट्स आदि बाजार में आनी शुरू हुई हैं पर वे कोई खास चीज नहीं हैं।

शास्त्रों में कहा गया है कि **"अश्मा भव, परशुर्भव"** तू पत्थर बन। अर्थात् तुम पत्थर जैसे कठोर शरीर वाले बनो। "परशुर्भव" परशु कहते हैं फरसे को या कुल्हाड़े को। अर्थात् दिमाग से तू फरसा जैसा तीक्ष्ण हो जा। फरसे का जितना प्रयोग करते जाएं, उतना ही वह तीखा, तेज होता जाता है और अगर उसका प्रयोग न करें तो उसमें जंग लगना शुरू हो जाता है। वस्तुतः मनुष्य की बुद्धि भी ऐसी है, दिमाग भी उसका ऐसा ही है। उनका प्रयोग जितना ज्यादा करेंगे; उतने ही प्रखर होते चले जाएंगे, अगर इनका प्रयोग नहीं करें तो बुद्धि कुन्द होनी शुरू हो जाएगी, उसमें जंग लगना शुरू हो जाएगा। इसलिए सीखने की आदत जरूर बनाइए। सीखने के लिए एक ट्रिक जरूर इस्तेमाल करें। जो विद्यार्थी कम्पटीशन में बैठते हैं; उन्हें यह जरूर ध्यान देना चाहिए। एक जगह पर लगातार बैठकर दो घण्टे पढ़िए और उसके बाद दस मिनट का थोड़ा-सा ब्रेक दें, दस मिनट के ब्रेक के बाद आप अपनी कुर्सी से उठकर अपने मुंह पर पानी के छींटें लगाइए। इस तरह से तीन बार कीजिए। अच्छी तरह से अपने आपको फ्रैश करने के बाद, फिर एक या आधा गिलास पानी पीकर, थोड़ी देर ताजी हवा में जाकर टहलिए।

विद्यार्थी बदलाव लाने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़कर 10 मिनट के लिए फोन लेकर या टी.वी. के सामने बैठ जाते हैं। वे कहते हैं कि मूड चेंज करने के लिए यह जरूरी है; लेकिन उन्हें यह पता नहीं है कि किरणों का जो विकरण फोन के माध्यम से निकलता है; वह मस्तिष्क पर और ज्यादा दबाव डालता है। विद्यार्थियों को जो ताजगी लगती है; वह उन्हें म्यूजिक के कारण लगती है। इसके लिए आप कोई म्यूजिक चला लें; लेकिन टहलते हुए। इससे भी बढ़िया तरीका यह है कि आप गुनगुनाते हुए केवल दस मिनट टहल लीजिए। फिर तीन-चार मिनट के लिए शवासन में लेट जाएं। लम्बे-गहरे श्वास लें, क्योंकि जितनी ज्यादा आपके ब्रेन को आक्सीजन मिलेगी उतना ही दिमाग बढ़िया ढंग से काम करेगा। दस मिनट का जो ब्रेक है वह आपके मस्तिष्क को ज्यादा ग्रहण करने की शक्ति देता है।

पढ़ने वाला कमरा भी आपका ऐसा होना चाहिए कि जिसमें ताजी हवा आती-जाती हो। ऐसे कमरे में मत बैठिए जिसमें हमेशा घुटन रहती हो। हो सके तो पूर्व की ओर अपना मुख करके, अपनी टेबल को पूर्व की दिशा में लगाइए। जिससे आपका चेहरा पूर्व की ओर हो। अर्थात् जिधर से प्रकाश आता है। जिन बच्चों को अच्छा टैलेन्टेड होना है और बढ़िया ढंग से पढ़ना है तो उनका मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए। क्योंकि प्रकाश उधर से ही आता है; इसलिए उनके अन्दर ज्ञान भी बहुत तेजी से आएगा। वे अध्ययन के समय जागरूक रहेंगे और परीक्षा में अवश्य सफल होंगे।

दूसरी बात यह है कि कम्पटीशन वाले विद्यार्थी डरकर नहीं पढ़ें। चाहे वे अट्ठारह घण्टे बैठकर पढ़ें, लेकिन उनके अन्दर घबराहट है, तो फिर पढ़ा हुआ याद नहीं हो पाता। दिमाग में पढ़ा हुआ सुरक्षित नहीं होगा, रिकार्ड नहीं होगा। कई विद्यार्थी पढ़ते समय गाने भी चला लेते हैं और साथ में पढ़ते भी रहते हैं, लिखते भी रहते हैं। वे सोचते हैं कि ऐसे में अच्छी पढ़ाई होती है लेकिन यह विधि, यह प्रक्रिया बिल्कुल गलत है। जैसे कोई टेपरिकार्ड से आवाज रिकार्ड करना चाहता है; किन्तु आसपास से गाड़ियां जा रही हों, लोग भी बोलते हुए जा रहे हों, तो क्या वहां बढ़िया रिकार्डिंग हो सकती है? जैसे रिकार्डिंग के लिए साउण्डप्रूफ स्टूडियो बनाया जाता है। ठीक ऐसे ही जहां आप पढ़ना चाहते हैं वह स्थान भी एकदम शान्त और एकान्त

- जारी पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य रक्षा

उत्तम स्वास्थ्य के सूत्र एवं रोगों से बचाव

आर्य सन्देश के इस अंक में स्वास्थ्य रक्षा स्तंभ में हम आपको बता रहे हैं कुछ वे उपयोगी प्रचीन नुस्खे जिनको अपनाकर आप जटिल बीमारियों से स्वयं को ओर अपने परिवार स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन हम यहां पर यह अवश्य स्पस्ट करना चाहते हैं कि ये पुराने वैद्यों द्वारा प्रचलित घरेलू नुस्खे हैं, अतः अगर किसी को कोई खतरनाक बीमारी हो तो कृपया अपने चिकित्सक का परामर्श और उपचार ही प्रयोग में लाएं और स्वस्थ रहें। - सम्पादक

अम्लपित्त-पित्त विकार

1. गूलर (डूमर) के पत्ते + 1 चम्मच मिश्रि को पीसकर 50ग्राम पानी मिलाकर प्रातः खाली पेट सेवन करें।

2.(1)भोजन के बाद प्रातः सायं एक-एक लौंग चूसने से नियंत्रित होता है।

(2) चार लौंग पीसकर पानी में घोलकर पिलाने से पित्त ज्वर कम होता है।

3. अम्लपित्त वालों को चाय की जगह अजवायन 3ग्राम + 1 ग्राम काला नमक भोजन के बाद लेना चाहिये।

4. दोपहर भोजन के बाद 40 ग्राम मूली पत्ते का रस (4 पत्ते) + मिश्रि 1 चम्मच मिलाकर सेवन सर्वोत्तम है।

5. आधा चम्मच छोटी हरड़ का चूर्ण + पुराना गुड़ मिलाकर सेवन करें। रात्रि भोजन के 40 मि. बाद पानी के साथ सेवनीय।

6. प्रातः दूब का रस 3 चम्मच + 1 चम्मच मिश्री नाश्ते के बाद लेवें।

7. छाछ (मठ्ठे) में अजवायन चूर्ण 2 ग्राम + जीरा चूर्ण 2 ग्राम + कालानमक 2 ग्राम दोपहर में पीवें।

विशेष - भोजन के बीच कम से कम पानी पीवें या भोजन के बाद बिल्कुल भी पानी न पियें, गर्म वस्तु का सेवन न करें। 45 मिनट बाद जल पियें। पित्त विकार के लिए चिरायता का काढ़ा सबसे प्रभावकारी है। अजवायन 4 ग्राम + 1ग्राम काला नमक + गुड़ बनाकर पीने से पित्त हमेशा नियंत्रित रहता है।

एक्युप्रेशर- पिताशय, अग्नाशय, स्टोमक, लिवर, हार्ट, कीडनी पाइंट दबावें।

प्राणायाम- खेचरी मुद्रा के साथ अनुलोम - विलोम, भ्रामरी शीतकारी प्राणायाम उपयोगी।

आसन- धनुरासन, सर्वांगासन, योग मुद्रासन, मयूरासन,।

गैस एवं कब्ज

1. अजवायन 3ग्राम + कालानमक 1ग्राम + गुड 5ग्राम, काढ़ा पीवें।

2. भोजन के बाद रात्रि में बालहरड़ चूसें (48 घण्टे तक गो-मूत्र में भीगोकर सूखा लें।

पेट साफ

1. अश्वगंधा 5 ग्राम + शतावर चूर्ण 5 ग्राम मिलाकर रात्रि में सोते समय लें।

2. 50 ग्राम अजवायन, 100ग्राम मेथी, 50ग्राम कालीजीरा अलग-अलग भूनकर पीसें। 1 चम्मच गर्म पानी के साथ भोजन के 10 मिनट के बाद लेवें।

वायु रोग

1. करंज के बीज 1 नग, गुड़ 5 ग्राम मिलाकर सेवन करें।

2. नींबू रस दो चम्मच + एक गिलास पानी+1ग्राम कालानमक मिलाकर पिलायें।

3. अजवायन आधा चम्मच + कालानमक 1 ग्राम उबालकर पिलावें या सामान्य पानी के साथ पी लें, तुरन्त आराम भोजन के 45 मिनट बाद पानी पीवें।

4. 100 ग्राम मट्ठा में 2 ग्राम भुना हुआ जीरा + 2 ग्राम काला नमक मिलाकर पीवें।

कफ

1. बादाम 100 ग्राम, खाण्ड 50ग्राम कालीमिर्च 20 ग्राम सभी का चूर्ण बनाकर 1 चम्मच भोजनोपरान्त सेवन करें।

2. 200ग्राम दूध में दो पीपली का चूर्ण डालकर खूब उबलाकर गुनगुना रोगी को पिलायें।

3. भोजन के बाद 2 बाल हरड़ चूसें और गुड़ खावें। 5ग्राम गुड़ + 2 ग्राम सोंठ + 5ग्राम बाल हरड़ से लाभकारी।

4. पोदिना रस 10ग्राम +10ग्राम गर्म पानी में मिलाकर लेवें। सोते समय नाक में 3 बूंद सरसों तेल डालें।

5. अजवायन 4 ग्राम + 2ग्राम कालानमक + 5ग्राम गुड़ का काढ़ा बनाकर पीवें। 5 कली लहसुन की चटनी खावें।

6. अडूसा ढ़ाई पत्ते + काली मिर्च ढ़ाई नग, काढ़ा पीवें (सुबह-शाम)।

7. अदरक रस + शहद 1+1 चम्मच सुबह-शाम लेवें तथा गुड़ का सेवन करें।

8. राई 500 मिलि. ग्राम, सेंधानमक 2 ग्राम व 2 ग्राम मिश्री सुबह-शाम लेवें।

विशेष - सूत्रनेती- जलनेति अत्यधिक उपयोगी है।

- शेष अगले अंक में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में टंकारा ट्रस्ट के सहयोग से जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) में

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा गुजरात में 7 से 9 फरवरी 2024 को तीन दिवसीय स्वाध्याय एवं योग साधना शिविर संपन्न हुआ। शिविर उद्घाटन के अवसर पर श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि आप स्वाध्याय से जुड़कर महर्षि दयानन्द के कार्यो व विचारों को गति देने का मन बनाएं तो उत्तम होगा। अगले एक वर्ष हमें इन्हीं बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना है। श्री सतीश चड्डा महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, शिविराध्यक्ष ने जीवन में स्वाध्याय का विशेष महत्व बताते हुए इसे नित्य करने की बात कही। श्री आ. रामदेव, धर्मवीर शास्त्री ने महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। शिविर में पंच महायज्ञ पुस्तक का स्वाध्याय करवाया गया।

श्री राजेन्द्र काजला योगाचार्य ने प्रातः कालीन वेला में आसन व प्राणयाम करवाये और उनके लाभ भी बताए। श्री कृष्ण

- शेष पृष्ठ 7 पर

'सहयोग' आर्य समाज का अनूठा सेवा प्रकल्प

आइए, हम सभी सहयोगी बनने का लें संकल्प

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज एक महान परोपकारी संगठन है। संसार का उपकार करना इसका मूल मंत्र और प्रमुख उद्देश्य है। अतः आर्य समाज लगभग पिछले 150 वर्षों से निरंतर सेवा साधना के पथ पर अग्रसर है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा भारत में एवं दिल्ली एन.सी.आर. में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजन में मानव कल्याण के लिए ''सहयोग'' एक ऐसा अनोखा, अनूठा सेवा प्रकल्प सिद्ध हो रहा है, जिसके माध्यम से अभाव ग्रस्त गरीब परिवारों में खुशियों की एक

सुखद किरण प्रकट हुई है। यूं कहने को तो 21 सदी का पुण्यमय भारत देश विश्व की पांचवीं अर्थ व्यवस्था के रूप में विख्यात है। किंतु आज भी यहां असंख्य लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम रह जाते हैं। जहां उनके पहनने के वस्त्र, जूते, चप्पल, सर्दी से बचाव के लिए कंबल और गर्म कपड़े, बच्चों के खेलने के लिए खिलौने और घर में पढ़ने पढ़ाने के लिए स्टेशनरी के सामान आदि की हमेशा कमी ही बनी रहती है। इस तरह के अभाव में हर आयु वर्ग के लोग घुट घुटकर जीवन जीने को मजबूर रहते हैं। दूसरी तरफ समाज में एक वर्ग ऐसा भी है जिनके पास उपरोक्त समस्त मूलभूत वस्तुओं की भरमार है और आवश्यकता से अधिक होने के कारण वे इन चीजों को घर में रखने से परेशान हो रहे हैं। वे अपने उपयोगी वस्त्रों, जैसे पेंट सर्ट, कुर्ता पायजामा, स्वेटर, कोट पेंट, सलवार, कमीज, साड़ी, गर्म कपडे, जूते चप्पल, सैंडल, बच्चों के खिलौनों, कापी किताब, स्टेशनरी के सामान, कंबल आदि के अतिरिक्त होने के कारण अनावश्यक रखरखाव से परेशान होकर या तो उन्हें कबाड़ में बेच देते हैं अथवा इधर उधर फेंक देते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना है– 'सहयोग'

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी सहित अन्य अधिकारियों ने जब इस असमानता को अनुभव किया, एक तरफ इतनी सारी चीजों को कहां रखूं, कितना जमा करुं की समस्या है और दूसरी तरफ ऐसी दयनीय स्थिति है कि पर्व त्यौहार के सीजन में बच्चे नये कपड़े और खिलौनों की जिद्द कर रहे हैं और गरीब माता पिता उन्हें झूठा दिलासा दे रहे हैं। सर्दी गर्मी में लोग परेशान हैं, इन सभी तथ्यों पर विचार करते हुए आर्य समाज के नेतृत्व को महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन से जुड़ी हुई वह घटना याद आई कि जब एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन उतारकर उसे जल में प्रवाहित कर दिया था। तब इस घटना को देखकर महर्षि दयानंद का कोमल हृदय द्रवित हो उठा था और उन्होंने अपने शरीर पर कम वस्त्र धारण करने का निश्चय कर सर्दी, गर्मी और बरसात में केवल एक कोपीन पहनकर रहना आरंभ कर दिया था। ऐसे दयालु महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयाई, सम्मानित अधिकारियों ने गरीब निर्धन जरूरतमंद लोगों को सहयोग देने के लिए एक विशेष सेवा योजना का शुभारंभ किया, जिसे आज हम सहयोग के रूप में जानते हैं। एक उदारता की भावना और ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' की कामना है– सहयोग। सहयोग काफी लंबे समय से दिल्ली एनसीआर और पूरे भारत में निर्धन बस्तियों में जाकर लोगों को पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र, जूते, चप्पल, पुस्तकें, स्टेशनरी का सामान, खिलौने, गरम कंबल और अन्य अनेक उपयोगी वस्तुएं विधिवत सम्मान पूर्वक वितरण करता है।

'सहयोग' द्वारा सामान एकत्रिकरण और वितरण की सुंदर व्यवस्था

सहयोग के कार्यकर्त्ता पहले इन सभी वस्तुओं का उन घरों से, संस्थाओं से संग्रह करते हैं, जिनके पास ये सारे साधन अतिरिक्त या अनावश्यक हैं। सहयोग ने जगह जगह एकत्रिकरण के सेंटर और संपर्क बना रखे हैं, जहां से प्रतिदिन यह सामान एकत्रित किया जाता है और फिर उसे साफ सुथरा करके, पैक करके, जैसे वस्त्रों को धुलवाकर, प्रेस कराकर, पैकेट बनाकर जूते चप्पलों को पॉलिश कराकर या फिर स्टेशनरी और खिलौनों को कसौटी पर परखकर, इनका सेवा बस्तियों विधिवत् में वितरण किया जाता है। वितरण कार्यक्रम के अंतर्गत पहले वहां यज्ञ किया जाता है और उस यज्ञ में सभी आयु-वर्ग के लोग इकट्ठा होते हैं, आहुति देते हैं, प्रार्थना करते हैं, गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हैं, दुर्गुण, दुर्व्यसनों से बचने के लिए संकल्प लेते हैं और फिर अपनी आवश्यकता अनुसार वस्त्र, बर्तन, खिलौने, स्टेशनरी, सर्दी गर्मी के कपड़े प्राप्त कर प्रसन्नता वक्त करते हैं। इस तरह से सहयोग नित-निरंतर मानव सेवा के कार्यों को करता आ रहा है।

कैसे बनें 'सहयोग' के सदस्य

- सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं।
- इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।
- इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।
- इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदनः- आधुनिक परिवेश में हमें ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता हमें पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अतः हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की ओर से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग, शुभ कर्मों का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर उनके विचारों को अपनाने का लें संकल्प

वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों के प्रति समाज को जागरूक करना हम सबकी जिम्मेदारी – सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन, जे.बी.एम. ग्रुप

समाज की जड़ता को समाप्त करके समाजिक चेतना को जागृत किया स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने – अरुण कुमार, सह सरकार्यवाह

अम्बेड़कर इंटरनेशनल सैन्टर नई दिल्ली में मनाया गया महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जन्मोत्सव

19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सम्पूर्ण जीवन मानव जाति के कल्याण हेतु समर्पित रहा, इसलिए उनकी 200वीं जयन्ती का दो वर्षीय महोत्सव परिवार, समाज और देश की परिधि को लांघता हुआ सम्पूर्ण विश्व में हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। इसका कारण स्पष्ट है कि जो महापुरुष सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण करें, मनुष्यमात्र को जीवन जीने की कला सिखाए, धर्म संस्कृति और संस्कारों का पाठ पढ़ाए, जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य की प्राप्ति का सुपथ दिखाए, ऐसे महापुरुष का जन्मोत्सव सम्पूर्ण मानव जाति का महोत्सव बन जाता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयन्ती के अवसर पर दिल्ली के डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में गुरुवार 21 मार्च 2024 को एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय दयानंद सेवा आश्रम संघ के अध्यक्ष तथा जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी तथा मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री अरुण कुमार जी उपस्थित रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित समारोह में उद्बोधन देते आर.एस.एस. के सह सहकार्यवाह श्री अरुण कुमार जी एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती 200वीं जयन्ती ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव समिति के अध्यक्ष एवं जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी तथा इस अवसर पर उपस्थित आर्यसमाज के श्रद्धालुओं, आर्यजनों एवं आमन्त्रित महानुभावों से भरा डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सैन्टर का सभागार।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री अरुण कुमार जी ने कहा कि महापुरुषों की जयन्ती केवल उनके जीवन का स्मरण नहीं होता। उसके साथ चार बातें जुड़ी होती है। इसका उद्देश्य केवल उनके जीवन पर चर्चा करना नहीं होता। जब हम उस महापुरुष का स्मरण करते हैं तो उस कालखंड का भी स्मरण करते हैं। उस कालखंड की चुनौतियों का भी स्मरण करते हैं और उन चुनौतियों के सामने उस महापुरुष के योगदान का भी स्मरण करते हैं। जब हम उनको अपना आदर्श मानते हैं तो हम सबको अपने आत्मावलोकन का भी अवसर होता है। इसका एक उद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन, योगदान एवं उनके दिखाए गए मार्ग की दृष्टिकोण में आज की चुनौतियों का उत्तर प्राप्त करना भी है।

उन्होंने कहा कि महर्षि जी के जीवन के सभी पक्षों का अध्ययन करने की जरूरत है। जिस पृष्ठभूमि में दयानंद जी ने कार्य किया वह समझना भी जरूरी है।

श्री अरुण कुमार जी ने कहा कि इस देश के महापुरुषों ने दूसरे देशों में जाकर कहा कि हमको देखो और हममें कुछ खास लगे तो हमारी तरह बन जाओ।

लेकिन इस्लाम का आक्रमण देश का ऐसा कालखंड था जिसमें हमारे सभी संस्थाएं नष्ट हो गई। अकल्पनीय अत्याचार हुआ। विश्व गुरु एवं ज्ञान के केन्द्र भारत में समाज का अवमूल्यन हुआ। समाज रूढ़िवादी हो गया, आत्म केंद्रित हो गया। समाज में जो कुरीतियां दिखाई दे रही हैं, वह इस्लाम के आक्रमण का परिणाम था। अंग्रेजों के आने के बाद समाज की आत्म स्मृति नष्ट हो गई और वह हीन भावना का शिकार हो गया।

उन्होंने बताया कि ऐसे में स्वामी दयानंद सरस्वती ने देश की चेतना को झकझोरा, जड़ता को समाप्त कर समाज की चेतना को जागृत किया। महर्षि जी ने कहा कि अपने स्व को समझना है तो अपने मूल ग्रंथो को अपने स्व के आधार पर अध्ययन करना होगा। हम क्या हैं, इसे समझना है और क्या करना है तो वेदों को पढ़िए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने कहा की वेदों की ओर लौटने का जो मार्ग महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दिखाया वह उनका सबसे बड़ा योगदान है।

आपने कहा आज गुलामी के चिह्न समाप्त करने के जो भाव देश में जागृत हुए हैं वह महर्षि के चिन्तन को साकार करने की ओर महत्वपूर्ण कदम है।

महर्षि दयानंद का चिन्तन बेहद मौलिक था, वे हमें हमारी उन्हीं जड़ों में ले जाना चाहते थे जिनके कारण कभी भारत विश्व गुरु था, जिन वेद के कारण हम ज्ञान-विज्ञान में विश्व के अग्रणी थे, वह वेद ज्ञान कहीं अंधकार में छिप चुका था। महर्षि की सबसे बड़ी कृपा कहें तो पुन: हमें वेदों की ओर लौटने का जो मार्ग उन्होंने प्रशस्त किया, अपने आप में एक ऐसा कार्य था जिसके लिए ऋषि दयानन्द हमेशा स्मरण किए जाते रहेंगे। हमारी उन्नति में जो अंधविश्वास और कुरीतियाँ बाधक बन चुकी थी, उन सब के प्रति समाज को उस अंधकार के काल में जागृत करना और उसके लिए हर प्रकार का साधन अपनाना यह ऋषि जी की कुछ मुख्य विशेषताओं में से एक था।

उन्होंने हमें जागृत किया उसका परिणाम आज विकसित भारत और स्वतंत्र भारत के रूप में हम देखते हैं। कितने ही महान स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने उनसे प्रेरणा ली और वर्तमान भारत के निर्माण में अपने जीवन को होम कर दिया, उनकी सूची बनाना भी आज तक किसी की सीमा में नहीं आ सका। पर आज भी हमारे सामने कुछ समस्याएं हैं जिन पर आज हमें विचार करना है महर्षि जी ने उसे समय की समस्याओं पर हमें जागरुक किया था आज वर्तमान और भविष्य में आने वाली संभावित चिन्ताओं और समस्याओं के प्रति हमें जागरूक रहना भी है और करना भी है। वास्तविक रूप से ये हमारी जिम्मेदारी है, 200वीं जयंती शायद हमें उन्हीं जिम्मेदारियों का एहसास करवाने के लिए ही उपस्थित है। हमारे सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने की जो साजिश और प्रयास हो रहे हैं उनको समझना और समझाना आज हमारी प्राथमिकताओं में होना चाहिए।

आर्य समाज के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. विनय कुमार विद्यालंकार जी ने कहा कि प्रश्न सभी के मन में आते हैं लेकिन उस प्रश्न का कारण खोजने के लिए जब कोई व्यक्ति खड़ा हो जाता है तो वह विचारक हो जाता है। उन्होंने सनातन का अर्थ बताते हुए कहा कि सनातन वह है जो सृष्टि के आरंभ में भी सत्य था, सृष्टि के मध्य में भी सत्य था, आज भी सत्य है और भविष्य में भी सत्य होगा। – ***संयोजक***

साप्ताहिक स्वाध्याय

गंगा तट पर सिंहनाद

(सन् 1867 से 1869 के सितम्बर मास तक)

गतांक से आगे -

मात्र कौपीनधारी महर्षि दयानन्द हरिद्वार से ऋषिकेश और लंढौरा होते हुए कर्णवास पहुंचे। हरिद्वार के कुम्भ पर्व पर प्राप्त किया हुआ पाण्डित्य का यश महर्षि जी के आगे-आगे जाता था। कुम्भ पर प्राय: सारे देश के साधु और यात्री एकत्र होते हैं। उन लोगों ने युवा संन्यासी के तेजस्वी भाषणों को और उनकी ख्याति को सुना था। वे लोग महर्षि जी के यश को उनके पहुंचने से पूर्व ही भिन्न-भिन्न स्थानों पर पहुंचा चुके थे। जहां महर्षि जी जाते, शीघ्र ही चारों ओर धूम मच जाती कि एक त्यागी संन्यासी आए हैं, जो धारा-प्रवाह संस्कृत बोलते हैं, जिन्होंने हरिद्वार में स्वामी विशुद्धानन्द जी से टक्कर ली थी, जो पाषाण और मूर्तिपूजा आदि का खण्डन करते हैं। महर्षि जी गंगा के तट पर रेती में विश्राम करते। रात को बालू का सिरहाना बनाकर सोए रहते। दिन में गप्पों का खण्डन करते और सदुपदेश देते। शीघ्र ही चारों ओर चर्चा फैल गई। गृहस्थ लोग महर्षि जी के उपदेशों को सुनते, पहले-पहले आश्चर्य चकित होते और फिर सन्देह करने लगते। सन्देह-निवृत्ति के लिए अपने गुरु ब्राह्मणों के पास जाते। वहां महर्षि दयानन्द के लिए गालियां तो मिलतीं, परन्तु सन्देह का समाधान न मिलता। पण्डित लोग महर्षि जी के सम्मुख आकर प्रश्नोत्तर करने का साहस न करते ।

अनूपशहर में पं० अम्बादत्त वैद्य और पं० हीरावल्लभ पर्वती स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने आए। शास्त्रार्थ का उद्देश्य मूर्ति पूजा का मण्डन करना था, परन्तु फल उल्टा निकला। पं० अम्बादत्त ने स्वयं निरुत्तर होकर एक अन्य पण्डित की ओर निर्देश कर दिया और पर्वती जी ने पराजित होकर अपनी पहले की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार सामने रखी हुई शालिग्राम की मूर्ति को गंगा में प्रवाहित कर दिया। फिर क्या था प्रजा ने मूर्तियां गंगा-प्रवाह के अर्पण कर दीं, कंठियां तोड़ डालीं, मानो अज्ञान को बहा दिया और बन्धनों को काट डाला। क्षत्रियों और वैश्यों के समूह आकर महर्षि जी से गायत्री और यज्ञोपवीत का प्रसाद लेने लगे। गंगा-तट पर अखण्ड यज्ञ होने लगा और सदियों से अधिकार-वंचित भारतीय प्रजा अपने धार्मिक अधिकारों को प्राप्त करके महर्षि दयानन्द का जय-जयकार करने लगी।

कुछ दिन तक इसी प्रकार भ्रमण करके महर्षि जी 20 मई सन् 1868 के दिन फिर कर्णवास आए और अपनी कुटिया में आसन जमाया। महर्षि जी अत्यन्त निर्भय थे। यदि वह निर्भय न होते तो सुधार के काम में हाथ ही न डालते। सुधार का कार्य शेरों का है, गीदड़ों का नहीं। जो मनुष्य लोक-निंदा से, किसी पागल के आक्रमण से या किसी शक्तिशाली के शस्त्र से डरता है, वह सदियों से जमी हुई कुरीतिरूप काई को उखड़ने का प्रयत्न नहीं कर सकता। कुरीति और रूढ़ि के कंटीले जंगलों को तर्क और सुबुद्धि के कुठार से वही काट सकता है जिसके हृदय में वाणी या बाण का भय नहीं है। महर्षि दयानन्द ने सदियों से प्रचचिल अन्ध विश्वासों और रूढ़ियों के खण्डन का बीड़ा उठाया था। उन्होंने कुछेक महन्तों और पुरोहितों और टीकाधारियों द्वारा कुचले हुए जनता के अधिकारों को फिर से दिलाने और अधिकारियों को सौंपने का संकल्प किया था। यदि महर्षि शेर न होता, तो भारतभर के सम्प्रदायाचार्यों को न ललकार सकता।

कर्णवास में महर्षि जी की निर्भयता का एक दृष्टान्त घटित हुआ। बरौठ जनपद-अलीगढ़ के रईस राव कर्णसिंह गंगा स्नान के लिए कर्णवास आए। वह वृन्दावन के वैष्णवाचार्य रंगाचार्य के शिष्य थे, और तिलक छाप लगाते थे। स्वामी जी की प्रसिद्धि सुनकर वह उनके स्थान

पर पहुंचे। कर्णसिंह की प्रकृति बहुत उग्र थी। उसने सुना था कि महर्षि जी तिलक छाप का खण्डन करते हैं, इसलिए पहले से ही उसके क्रोध का पारा चढ़ा हुआ था। महर्षि जी ने आदरपूर्वक पास के आसन पर बैठने के लिए कहा। कर्णसिंह ने उत्तर दिया कि हम वहीं बैठेंगे, जहां तुम बैठे हो। इस पर महर्षि जी ने जिस शीतलपाटी पर वह बैठे थे, उसका कुछ भाग खली कर दिया। यहां तो झगड़ा न बढ़ा। झगड़ा पैदा करने पर तुला हुआ कर्णसिंह निराश हुआ, तब नया ढंग प्रारम्भ हुआ।

- क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित
जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

When all the Pandits were sure that they had been defeated, they thought of a trick. Leaving aside the topic of Vedas, they started debate on subjects of Puranas. But they began to feel soon that their trick had also failed, Swamiji started questions about Vyakran, none of them could give satisfactory answer. The were irritated and disappointed. Then Madhvacharyaji moved forward. He placed two papers in the middle of the crowd and said , "It is clearly written there that the Yajman should read Puranas 10 days after completing Yajna. Now Tell us what for has the word 'Puran' been used?"

Swamiji, "Please read out complete topic."

Vishudhanand handed over the papers to Swamiji and said "Please read it yourself."

Swamiji "Please read it yourself."

Vishudhanand "I can not read without glass (spectacles), So you will have to read." Swamiji took hold of the papers. It was dark due to night. So deepak was brought light of the deepak was very dim. So it took some to read the paper. Team of Pandits found it a good chance to stand up. Seeing this trick Swamiji caught Vishundanand by hand and said, "sit down for some time. Leaving the stage without final result being declared, it is not proper for wise people like you." But he did not get ready to sit. He moved his hand on Swamiji's back and said, "Please sit down. What was expected has happened getting sign from the Pandit Kashi Naresh Ishwari Narayan Singh also stood up and started clapping. As per planning made already all the people stood up together chanting 'Santan Dharm ki Jai' Kotwal was a very nice man. He did not like misbehaviour of Kashi Naresh. He said to Naresh, "You have shown wrong behaviour by clapping. It is against the rules of the debete, Naresh put his hand behind Kotwal's back and started moving for ward." He said "You and we all are Idol worshippers. So, we should defeat our common enemy some how or the other." So understanding the meaning of what was said, the whole crowd started misbehaving. They threw stones, shoes and whatever they could find towards Swamiji. But all those things could not shake the strong and determined heart and mind of Swamiji.

Pauranik group lead the procession of Pandits thought out the city. They showed the proof of "Truth of Idol worship". They spread the news all around that Swamiji had been defeated. Pandits arranged to advertise on papers that no one should go to Swamiji. They declared that those who would go to him, they would be decleared as 'Sinners'. They could do whatever they could do to insult Swamiji but they could not misguide the world outside Kashi. The impartial newspapers of the country published the news of Swamiji's victory. 'Ruhelkhand' newspaper wrote down, 'Swami Dayanand has defeated the Pandits of Kashi'. 'Gyan Pradayni' of Lahore gave the news that there is no doubt that Pandits were unable to prove 'Idol worship' from Vedas. 'Hindu patriot' published that "Though Pandits were very proud of their 'knowledge of Shastras', but Swamiji defeated them."

The papers advertising about 'not contacting Swamiji' also proved to be unsuccessful.

The result was the more people started going to listen to Swamiji. Swamiji's name and fame spread all around. How could the ugly and naughty group of unwise Pandits defeat the most learned wise man like Swami Daya Nand? News of this debate spread all over the world like the wind. And along with it also let the world know about the Panditya of Swami Daya Nand. ***To be Continue.....***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

रजाकार और आर्यसमाज .....

पृष्ठ 2 का शेष

यानि जितना आर्य समाज के लोग शांति से विवाद का हल चाहते थे निजाम उतना ही कठोरता अपनाता जा रहा था। अचानक बीदर जिले में हवन कुंड तोड़े जाने लगे, आर्य समाज मंदिरों की जमीन पर कब्ज़ा शुरू कर दिया। बात यहाँ तक आ पहुंची की हवन कुंड को ही सम्पूर्ण मंदिर समझकर उन पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके अतिरिक्त भी देखें तो खटगाँव में कई मुसलमानों ने जनेऊ पहने लोगों के जनेऊ तोड़ डाले। मंदिरों के उत्सव में भाग लेने वाले लोगों पर हमले होने लगे। आर्य समाज के लोगों पर झूठे मुकदमे लगाये जाने लगे। यहाँ तक कि किसी के हिन्दू के हाथ में सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक देखते ही निजामी पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती। यानि शांतिपूर्वक काम कर रहे तत्कालीन आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के लिए यह नई परेशानी थी।

आर्य समाज के नेता भाई बंसीलाल जी, श्याम लाल जी, शेषराव जी, दत्तात्रेय प्रसाद, गोपाल देव शास्त्री आदि कई आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव घूम कर हिन्दुओं को वैदिक धर्म के ध्वज तले हथियार जमा करने लगे। अनगिनत गांवों में आर्य समाज मंदिर स्थापित हुए, इत्तेहादुल पार्टी या रजाकार की ओर से आक्रमण होने का कोई भी अंदेशा होता, तो आर्य समाज मंदिर में लोग जुटने लगते घर-घर से पुरुष और 18-20 साल के लड़के लाठियां, कुल्हाड़ी, भाले, बरछियाँ, तलवारें, बंदूके आदि लेकर आर्य समाज मंदिर की ओर दौड़ पड़ते। 5-10 मिनट में ही सभी, पूरे अनुशासित तरीके से हिन्दू सेना मुकाबले के लिए तैयार हो जाती।

आर्य समाज के इस आन्दोलन से खोफ खाने लगे, नतीजा आर्य समाजी कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया जाने लगा। उन्हें जेल के अन्दर भीषण यातना दी जाने लगी। आंदोलन को कुचलने के लिए उसने हर संभव मार्ग अपनाया जाने लगा। देश भर से आर्य समाज के कार्यकर्ता हैदराबाद में निजाम की सेना एवं रजाकारों से भिड़ने निकल पड़े। सोचिये आप कि जब देश के अन्य हिस्सों से हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम में बलिदान कितनी संख्या में लोग वहां पहुंचे होंगे?

जब आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने वहां अलख जगाई तो निजाम की सेना इत्तेहादुल पार्टी और मुस्लिम गुंडे और भी भड़क उठे। साल 1938 में गुंजोटी में वेदप्रकाश जी का खून हो गया। उसके बाद भाई श्यामलाल जी को जेल में ही उन्हें जहर देकर मार दिया गया। हैदराबाद राज्य में 1938-39, इन दो सालों में शहर में हजारों की संख्या में आर्य समाजी लोगों ने सत्याग्रह किया। सोलापुर में माधवराव अणे की अध्यक्षता में एक परिषद् आयोजित की गई ताकी इस सत्याग्रह को हिन्दुस्तान की जनता का भी समर्थन मिल सके।

अंतत: हैदराबाद विरोध दिवस मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। सारे हिन्दुस्तान भर में हैदराबाद विरोध दिवस का माहौल बनने लगा। भारत भर से कई आर्य समाजी सत्याग्रह में भाग लेने के लिए हैदराबाद स्टेट पहुँचने लगे ही थे। इनमें सोलापुर, राजस्थान, दिल्ली, नागपुर, उत्तर प्रदेश, रावलपिंडी से हजारों कार्यकर्ता हैदराबाद में दाखिल हुए। नतीजा अनगिनत सत्याग्रहियों को जेलों में ठूंस दिया गया। कईयों को पीटा गया। ख़राब खाना और पानी देने के कारण कई सत्याग्रही बीमार पड़ गए। उसमें भी हद तो तब हो गई, जब इत्तेहादुल संगठन के गुंडे जेलों में घुस कर पुलिस के सामने, सत्याग्रहियों को बेरहमी से मारने-पीटने लगे। इसमें एक कार्यकर्ता सदाशिव विश्वनाथ पाठक की हैदराबाद जेल में मृत्यु हो गई । राजस्थान के स्वामी ब्रह्मानंद जी का भी चंचलगुडा जेल में निधन हो गया। हिसार के शांति प्रकाश जी की भी हैदराबाद जेल में मृत्यु हो गई। एक के बाद एक की मौत होती रही। इतना ही नहीं, यहां तक कि अगर को सरकारी कर्मचारी किसी आर्य समाजी से बात करता हुआ दिख जाए, तब भी उसे नौकरी से निकाल देने के आदेश जारी कर दिए गए थे। इस प्रकार निजाम ने हर तरह से आर्य समाजी कार्यकर्ताओं पर अत्याचार किए। आर्य समाज पर निजाम को अत्यंत क्रोध था क्योंकि आर्य समाज के कारण ही वहां हिन्दुओं को संगठित किया गया था तो निजाम ने आर्य समाज के आंदोलन को कुचलने के लिए उसने हर संभव मार्ग अपनाया। लेकिन उसकी प्रतिक्रिया आर्य समाज की शाखाएं दुगनी होने में नजर आने लगी। यानि आर्य समाज ने न केवल हिन्दुओं का संगठन किया, बल्कि जन्मजात मुसलमानों को भी वैदिक पद्धति से दीक्षा देकर उनका शुद्धिकरण का कार्य अत्यंत द्रुतगति से जारी रखा।

मामला बढ़ा तो तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल जी, प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरु से मिले और कहा कि बिना हैदराबाद के आजादी अधूरी है। नेहरु ने प्रति उत्तर में कहा क्या दूसरा कोई विकल्प नहीं है। पटेल जी ने कहा नहीं, बल्कि ये अच्छा मौका है फ़िलहाल आर्य समाज के हजारों कार्यकर्ताओं ने निजाम की जड़ें हिला रखी है सिर्फ सेना भेजने का आदेश चाहिए, अंतत: भारत की स्वतंत्रता के 13 महीने बाद आख़िरकार 13 सितंबर, 1948 को भारतीय सेना मेजर जनरल जे.एन. चौधरी के नेतृत्व में हैदराबाद में घुसी। भारतीय सेना की इस कार्रवाई को ऑपरेशन पोलो का नाम दिया गया 108 घंटों तक चली इस कार्रवाई में 1,373 रज़ाकार मारे गए। हैदराबाद स्टेट के 807 जवानों की भी मौत हुई। भारतीय सेना ने अपने 66 जवान खोए जबकि 97 जवान घायल हुए और हैदराबाद भारत का हिस्सा बन गया। या कहो एक मजहबी शासक से हैदराबाद मुक्त हुआ वहां के हिन्दू भारत के नागरिक बने। इसे हैदराबाद मुक्ति आन्दोलन कहें या संग्राम आज भी जब हैदराबाद के विलय का किस्सा सामने आता है उस किस्से में बिना आर्य समाज के आगे नहीं बढ़ा जा सकता, क्योंकि हैदराबाद विलय में आर्य समाज का अपना एक बलिदानी एवं गौरवशाली इतिहास जुड़ा है। - ***सम्पादक***

टंकारा में स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

पृष्ठ 4 का शेष

अग्निहोत्री योगाचार्य, राम सेवक शास्त्री, अनीता शास्त्री, सुषमा शर्मा ने भी अपने विचार रखे। रात्रिकालीन सत्संग में आर्य समाज शाहाबाद मोहम्मदपुर की महिलाओं राजवती आर्या, वीरमती सोंलकी, रानी बाला देवी, सरला, सन्तोष लाम्बा, उषा कर्मवीरी, बबीता, विकास नगर से मीना आर्या, राजनगर से शेर सिंह, पवन, कृष्ण सोनीपत से कृष्णा देवी, हरिद्वार से धनवंती, मथुरा से श्याम चौधरी, राकेश आर्य शाहजहाँपुर, सुल्तान सिंह धौलपुर, हैदराबाद से हेमलता आर्या ने भजनों व विभिन्न प्रस्तुतियों द्वारा समा बांधा। इसीके साथ सुधीर गुप्ता, ओमदत्त, अजय तनेजा, मीनू तनेजा, श्रीमती किरण चड्डा, डा. दलीप दिनकर ने भाग लिया।

शिविर समापन के अवसर पर 60 शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री अजय सहगल, उपप्रधान आ. के. सभा दिल्ली, श्री सुखवीर सिंह मंत्री दि.आ.प्र. सभा व डॉ. मुकेश आर्य मंत्री आ.के.सभा दिल्ली ने प्रदान किये। श्री अजय सहगल ने स्वाध्याय एवं अनुशासित जीवन शैली को प्राथमिकता दी। श्री सुखवीर सिंह ने स्वाध्याय शिविरों को सभा का एक सराहनीय कदम बताया व इनकी सार्थकता के विषय में विचार रखे। डॉ. मुकेश आर्य ने स्वाध्याय को आत्मिक उन्नति का मार्ग बताया, भविष्य में शिविरों से जुड़े रहने का आग्रह करते हुए टंकारा ट्रस्ट के पदाधिकारियों का व्यवस्था प्रदान करने हेतु धन्यवाद व आभार व्यक्त किया।

- डॉ. मुकेश आर्य 'सुधीर',
शिविर संयोजक

विद्यार्थी प्रतिभा विकास के सूत्र

पृष्ठ 3 का शेष

होना चाहिए। जिससे कॅन्सेन्ट्रेशन पूरी तरह से बनाया जा सके।

रजिस्ट्रेशन से मतलब है जो आप पढ़ रहे हैं, वह ठीक ढंग से रिकार्ड हो सके। आपके दिमाग में प्रवेश हो सके। बहुत ध्यान से रुचिपूर्वक पढ़िए। रुचि पैदा करके पढ़ने में मन लगाना चाहिए। यह सोच करके पढ़िए कि यही ज्ञान मेरा भविष्य तय करेगा। मेरा भविष्य इसी से बनेगा। जो क्लास में प्रथम आते हैं, वे आसमान से उतरे हुए कोई फरिश्ते नहीं होते हैं। सोचना चाहिए कि जैसे वे हैं, वैसे ही मैं हूं। मुझे थोड़ी-सी कोशिश ज्यादा करनी पड़ेगी। बस इतनी-सी बात है। थोड़ा टाइम पढ़ाई में ज्यादा लगेगा तो आप भी आगे बढ़ सकते हैं ऐसा मन में विश्वास रखकर पढ़ें।

मनोविज्ञान के अनुसार मानव में तीन चीजें हैं। एक है सुपर कॉन्शस माईण्ड, दूसरा सबकॉन्शस माईण्ड और तीसरा कॉन्शस माईण्ड। जो सबकॉन्शस माईण्ड है वह आपका अवेचतन मन है। वहां जाकर आपकी सारी चीजें रिकार्ड होती है। आपकी प्रैक्टिस वहां जा करके अंकित हो जाती है। इसके लिए यह करें कि जब भी आप पढ़ें, तो इतना मन लगाकर पढ़ें कि वह स्टोर हो जाए और जब स्टोर हो जाए, तो जो आपने याद कर लिया है, उसे रिवाईज जरूर किया करें। जो आपने पढ़ा उसके पॉइन्ट्स नोट कर लिया करें। पॉईन्ट्स नोट करने के बाद दुबारा रिवाईज करने का मौका आए, तो उन्हीं पॉईन्ट्स को देखकर, एक बार सरसरी नजर पूरे पाठ पर डाल लीजिए। इससे आपको अपना पाठ हमेशा याद रहेगा।

- आचार्य अनिल शास्त्री

शोक समाचार

प्रो. अशोक रुस्तगी को मातृशोक

आर्यसमाज के अमरोहा से प्रकाशित समाचार पत्र आर्यवर्त केसरी के मुख्य सम्पादक प्रो. अशोक रुस्तगी जी की पूज्य माताजी श्रीमती शकुन्तला देवी जी का 3 मार्च, 2024 को 85 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 25 मार्च, 2024 से रविवार 31 मार्च, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 28-29-30/03/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 मार्च, 2024

ओ३म्

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर आर्य प्रतिनिधि सभा, अमरीका द्वारा आयोजित भव्यातिभव्य

अमरीका चलो अमरीका चलो

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

न्यूयार्क, दिनांक 18-19-20-21 जुलाई 2024

सम्माननीय भाईयों और बहिनो!

भारत के सैकड़ों आर्यजन इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने पहुँच रहे हैं। आप भी अपना रजिस्ट्रेशन शीघ्र ही करायें। इस अवसर पर जो यात्री अमरीका घूमना फिरना चाहते हैं उनके लिये दो प्रकार की यात्राओं का आयोजन किया गया है। ध्यान रहे कि अन्य देशों की अपेक्षा अमरीका की यात्रा महंगी रहती है क्योंकि केवल एअर टिकिट का मूल्य ही लगभग एक लाख पच्चीस हजार चल रहा है।

प्रथम टूर - 5 रात्रि 6 दिन, व्यय-राशि 2,35,000/- रुपये

17 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)

3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क

इस राशि में निम्नलिखित खर्च शामिल हैं

हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्श्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%

द्वितीय टूर - 7 रात्रि 8 दिन, व्यय-राशि 2,75,000/- रुपये

15 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)

2 रात्रि नियाग्रा, 3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क

इस राशि में निम्न लिखित खर्च शामिल हैं

हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्श्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%

उक्त यात्रा में जाने वाले सभी इच्छुक यात्रीगण शीघ्र ही 50,000/- (पचास हजार) का बैंक ड्राफ्ट Thomas Cook (India) Ltd. के नाम का बनवाकर निम्नलिखित पते पर भेजें।

न्यूयार्क आर्य महासम्मेलन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

टूर रजिस्ट्रेशन के लिये तथा यू.एस. वीजा के लिये कृपया श्री संदीप आर्य से मो.नं. 9650183339 पर सम्पर्क करें

कृपया नोट करें: जो यात्री वीजा मिलने के बाद भी यदि टूर में नहीं जायेंगे उनकी 50,000/- की एडवांस राशि वापस नहीं होगी। एडवांस राशि केवल उन्हीं को वापस होगी जिन्हें यू.एस. वीजा नहीं मिलेगा।

प्रतिष्ठा में,

ऋग्वेद यजुर्वेद

आर्य समाज, सुन्दर विहार दिल्ली-110087 के 39वें वार्षिक उत्सव

दिनांक 5, 6, 7 अप्रैल 2024 के शुभ अवसर पर

प्रवचन माला एवं भजनों का कार्यक्रम

यज्ञ ब्रह्मा : श्री प्रमोद कुमार शास्त्री

शुक्रवार 5 अप्रैल 2024 (सायं 5:30 से रात्रि 9:00 बजे तक)

विशिष्ट अतिथि :- श्रीमती मोनिका गोयल

(माननीया निगम पार्षद, दिल्ली नगर निगम)

शनिवार 6 अप्रैल 2024 (सायं 5:30 से रात्रि 9:00 बजे तक)

विशिष्ट अतिथि :- श्री विनय आर्य

(महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)

पूर्णाहुति

रविवार 7 अप्रैल, 2024 (प्रात: 7:30 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक)

कार्यक्रम के समापन पर शांतिपाठ - तीनों दिन ऋषि लंगर, आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

-: निवेदक :-

संरक्षक	प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
शांता मल्होत्रा मनोरमा चड्ढा कंवरभान क्षेत्रपाल	राजेन्द्र पाल सिंह वर्मा	अमरनाथ बत्रा	प्रहलाद सिंह आर्य

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹60, प्रचारार्थ मूल्य ₹40	विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹100, प्रचारार्थ मूल्य ₹60	पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80, प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150, प्रचारार्थ मूल्य ₹100	स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200, प्रचारार्थ मूल्य ₹120	उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100, प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — 250 / 160	सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — 300 / 200	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, 427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6 — Ph : 011-43781191, 09650522778 E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group — Our milestones are touchstones

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002

91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह